मिथिला दर्शन

सम्पादक-मण्डल
प्रो० प्रबोध नारायण सिंह (प्रधान सम्पादक)
प्रोफेसर इला रानी सिंह

सम्पादकीय	१
मैथिली लिपिक समस्या— श्री रमानाथ झा	२
आकाश दीप—श्री आरसी प्रसाद सिंह	४
मृत्युक जन्म—नचिकेता	७
बजबह युद्ध नगाड़ा— प्रो० शिवशंकर मिश्र, 'नृसिंहन'	८
अपर्णा—श्री प्रवासी	६
शुभ कामना— श्री हरिकृष्ण झाझड़िया, जे० पी०	१३
औद्योगिक— संभावना-श्री श्यामसुन्दर, स्वाईका बी०ए०	१५
मनसा वाचाकर्मणा— श्री रामकृष्ण ठाकुर, एफ० सी० ए०	१७
संघे शक्ति— श्री प्रभाकर झा, एफ० सी० ए०	१६
हार्दिक आश्वासन— श्री शीतल प्रसाद राय, ऐडभोकेट	२१
मैथिली-सेवी संस्था सब सँ— श्री नरेन्द्र झा, ए० सी० ए०	२३
अनुरोध—प्रो० सरोजानन्द चौधरी	२६
पुस्तक परिचय—नचिकेता	२९
विविध समाचार—	४१

एक प्रति	४०
वार्षिक	४=५०
अर्ध-वार्षिक	२=५०
आजीवन	५१)
संरक्षक	१२५)

[निःशुल्क डाक-व्यय]

मिथिला-दर्शन (प्रा०) लिमिटेड
१४ बी, ब्रजनाथ मित्तर लेन, कलकत्ता-६

मृत्युक जन्म

—नचिकेता

कालिह जे नवजातक
चिकरि चिकरि कए कानै लागल सौरी घर मे,
ओकरा ल' कए और एकटा मृत्यु जन्म लेलक।
ओकर बाप कें चिन्हैत छियैक ?
मौस देह मे छैके नहि ;
हड्डी हँसि रहल अछि दाँत निपोड़ने—
व्यंग्य क' रहल अछि स्वास्थ्य-परिकल्पना क !
जेहन ओकर घर शतश्छिद्र अछि,
ओहने परिधेय वस्त्र;
देहक भीतर ओहने फोंक।
टी० बी० कें पोसने अछि,
जेना ओकर बगलक अट्टालिका सब मे
लोग कुकुर पोसैत अछि।
मायक देह मे किछु छैके नहि ;
बाँचल अछि कि नहि, बुझनाइ कठिन।
तैयौ, शिशु कनैत - कनैत
(अपन दावीक) नारा लगबैत
जन्म लेलक।
मृत्यु मुंह बौने अछि
आ' हमर पृथ्वी पर
मनुष्यक फसिल बढ़ल जाइछ
बिना हर, बरद आ' खादहिक।

—*—